ISSN: 2582-5526 www.thevoiceofcreativeresearch.com

The Voice of Creative Research

Vol. 8 & Issue 3 (July 2026)

Peer Reviewed Article

DOI: https://doi.org/10.53032/tvcr/2026.v8n3.06

सामुत्थानशीलता, आध्यात्मिक बुद्धि एवं सामाजिक-आर्थिक स्थिति के मध्य संबंध: प्रशिक्षु शिक्षकों के संदर्भ में एक व्यवस्थित साहित्य समीक्षा

(Relationship among Resilience, Spiritual Intelligence, and Socio-Economic Status: A Systematic Literature Review in the Context of Teacher Trainees)

अंजली कुमारी
शोधार्थी (बी.एड. विभाग)
महाराणा प्रताप राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

डॉ. सुनील कुमार पाण्डेय
सहायक आचार्य, बी.एड. विभाग
महाराणा प्रताप राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

सार

प्रशिक्षु शिक्षकों का समग्र विकास केवल शैक्षणिक दक्षताओं पर निर्भर नहीं करता, बल्कि उनकी सामुत्थानशीलता (Resilience), आध्यात्मिक बुद्धि (Spiritual Intelligence) तथा सामाजिक-आर्थिक स्थिति (Socio-Economic Status) जैसे मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक कारकों से भी प्रभावित होता है। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य इन तीनों चरों के मध्य संबंधों का व्यवस्थित साहित्य समीक्षा (Systematic Literature Review) के माध्यम से विश्लेषण करना तथा उपलब्ध राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय अध्ययनों के आधार पर शोध प्रवृत्तियों, प्रमुख निष्कर्षों एवं अनुसंधान अंतरालों की पहचान करना है। अध्ययन में वर्ष 2000 से 2025 तक प्रकाशित शोध-पत्रों, पुस्तकों, शोध-प्रबंधों तथा नीति दस्तावेजों का चयन पूर्व-निर्धारित समावेशन एवं बहिष्करण मानदण्डों के आधार पर किया गया। उपलब्ध साहित्य के विषयगत एवं तुलनात्मक विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ कि सामुत्थानशीलता, आध्यात्मिक बुद्धि तथा सामाजिक-आर्थिक स्थिति प्रशिक्षु शिक्षकों के व्यक्तित्व, मानसिक स्वास्थ्य, आत्म-प्रभावकारिता तथा व्यावसायिक विकास के महत्वपूर्ण निर्धारक हैं। समीक्षा से यह भी ज्ञात हुआ कि आध्यात्मिक बुद्धि सामुत्थानशीलता को सुदृढ़ करने तथा सामाजिक-आर्थिक प्रतिकूलताओं के नकारात्मक प्रभाव को कम करने में सुरक्षात्मक (Protective) कारक के रूप में कार्य कर सकती है। यद्यपि इन तीनों चरों पर स्वतंत्र रूप से पर्याप्त शोध उपलब्ध हैं, तथापि विशेषकर भारतीय बी.एड. एवं डी.एल.एड. प्रशिक्षु शिक्षकों के संदर्भ में इनके संयुक्त

संबंधों पर आधारित अनुभवजन्य अध्ययन अत्यंत सीमित हैं। यह अध्ययन शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में सामुत्थानशीलता, आध्यात्मिक बुद्धि, जीवन-कौशल, मूल्य-आधारित शिक्षा तथा मनोसामाजिक सहयोग को समाविष्ट करने की आवश्यकता पर बल देता है। साथ ही, यह भविष्य के अनुसंधानों हेतु संरचनात्मक समीकरण मॉडल, दीर्घकालिक अध्ययन तथा मिश्रित अनुसंधान पद्धतियों के उपयोग की अनुशंसा करता है। प्रस्तुत समीक्षा राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अनुरूप गुणवत्तापूर्ण, संवेदनशील एवं मानसिक रूप से सुदृढ़ शिक्षकों के निर्माण हेतु एक महत्वपूर्ण वैचारिक आधार प्रदान करती है।

(Abstract) Translation

The holistic development of teacher trainees does not depend solely on academic competencies; it is also influenced by psychological and social factors such as resilience, spiritual intelligence, and socio-economic status. The present research paper aims to analyse the relationships among these three variables through a systematic literature review and to identify research trends, major findings, and research gaps on the basis of available national and international studies. The study selected research articles, books, dissertations, and policy documents published between 2000 and 2025 according to predetermined inclusion and exclusion criteria. The thematic and comparative analysis of the available literature revealed that resilience, spiritual intelligence, and socio-economic status are significant determinants of teacher trainees' personality, mental health, self-efficacy, and professional development. The review further indicated that spiritual intelligence may function as a protective factor by strengthening resilience and reducing the negative effects of socio-economic adversity. Although sufficient research is available on each of these variables independently, empirical studies examining their combined relationships remain extremely limited, particularly in the context of Indian B.Ed. and D.El.Ed. teacher trainees. The study emphasises the need to incorporate resilience, spiritual intelligence, life skills, value-based education, and psychosocial support into teacher education programmes. It also recommends the use of structural equation modelling, longitudinal studies, and mixed-method research approaches in future investigations. In alignment with the National Education Policy 2020, the present review provides an important conceptual foundation for preparing competent, sensitive, and mentally resilient teachers.

कुंजी शब्दः सामुत्थानशीलता, आध्यात्मिक बुद्धि, सामाजिक-आर्थिक स्थिति, प्रशिक्षु शिक्षक, शिक्षक शिक्षा, व्यवस्थित साहित्य समीक्षा, आत्म-प्रभावकारिता, सकारात्मक मनोविज्ञान, राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020

Keywords: Resilience, Spiritual Intelligence, Socio-Economic Status, Teacher Trainees, Teacher Education, Systematic Literature Review, Self-Efficacy, Positive Psychology, National Education Policy 2020

प्रस्तावना

इक्कीसवीं शताब्दी में शिक्षा की अवधारणा केवल ज्ञानार्जन तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि इसका उद्देश्य ऐसे शिक्षकों का निर्माण करना है जो बौद्धिक रूप से दक्ष, भावनात्मक रूप से संतुलित, नैतिक रूप से उत्तरदायी तथा

सामाजिक रूप से संवेदनशील हों। वैश्वीकरण, तीव्र तकनीकी परिवर्तन, बदलती सामाजिक संरचनाओं तथा शिक्षा व्यवस्था में निरंतर हो रहे सुधारों ने शिक्षक की भूमिका को अत्यधिक जटिल एवं बहुआयामी बना दिया है। वर्तमान समय का शिक्षक केवल विषय-वस्तु का संप्रेषक नहीं, बल्कि अधिगम का सहायक, नवाचार का प्रेरक, मूल्य-निर्माता तथा सामाजिक परिवर्तन का सक्रिय एजेंट है। ऐसी परिस्थितियों में शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों का दायित्व केवल शैक्षणिक दक्षता विकसित करना नहीं, बल्कि प्रशिक्षु शिक्षकों में उन मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक क्षमताओं का विकास करना भी है जो उन्हें व्यावसायिक जीवन की चुनौतियों का प्रभावी ढंग से सामना करने में सक्षम बना सकें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 ने स्पष्ट रूप से इस बात पर बल दिया है कि शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में जीवन कौशल, नैतिक मूल्यों, भावनात्मक सुदृढ़ता, समावेशिता, चिंतनशीलता तथा मानवीय दृष्टिकोण का समावेश किया जाना चाहिए। इस नीति के अनुसार प्रभावी शिक्षक वही है जो प्रतिकूल परिस्थितियों में भी सकारात्मक दृष्टिकोण बनाए रखे, आत्म-नियंत्रित हो, सामाजिक उत्तरदायित्व का निर्वहन करे तथा विद्यार्थियों के समग्र विकास के प्रति प्रतिबद्ध रहे। इन अपेक्षाओं की पूर्ति के लिए प्रशिक्षु शिक्षकों में सामुत्थानशीलता (Resilience), आध्यात्मिक बुद्धि (Spiritual Intelligence) तथा अनुकूल सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियाँ अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती हैं।

सामुत्थानशीलता आधुनिक सकारात्मक मनोविज्ञान (Positive Psychology) की एक केंद्रीय अवधारणा है। यह व्यक्ति की वह क्षमता है जिसके माध्यम से वह तनाव, संकट, असफलता अथवा प्रतिकूल परिस्थितियों से उबरकर पुनः संतुलित एवं प्रभावी कार्यशीलता प्राप्त करता है। प्रशिक्षु शिक्षकों के संदर्भ में यह क्षमता विशेष महत्व रखती है क्योंकि प्रशिक्षण अवधि में उन्हें शैक्षणिक दबाव, विद्यालयी अभ्यास शिक्षण, मूल्यांकन, सीमित संसाधन, व्यावसायिक अनिश्चितता तथा व्यक्तिगत चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। जिन प्रशिक्षुओं में सामुत्थानशीलता अधिक होती है, वे इन परिस्थितियों से सकारात्मक ढंग से सीखते हैं तथा भविष्य में अधिक प्रभावी शिक्षक बनते हैं।

इसी प्रकार आध्यात्मिक बुद्धि व्यक्ति को जीवन के उद्देश्य, नैतिक मूल्यों, आत्म-जागरूकता, करुणा, धैर्य, आत्म-नियंत्रण तथा आंतरिक संतुलन का अनुभव कराती है। Zohar एवं Marshall (2000) ने इसे वह बुद्धि माना है जो व्यक्ति के समस्त निर्णयों एवं व्यवहार को अर्थपूर्ण दिशा प्रदान करती है। आध्यात्मिक बुद्धि तनाव प्रबंधन, भावनात्मक नियंत्रण तथा सकारात्मक जीवन-दृष्टि को विकसित करती है, जिससे व्यक्ति विपरीत परिस्थितियों में भी आशावादी बना रहता है। शिक्षक शिक्षा के संदर्भ में यह गुण प्रशिक्षुओं को केवल सफल शिक्षक ही नहीं, बल्कि उत्तरदायी एवं संवेदनशील नागरिक बनने में भी सहायता प्रदान करता है।

दूसरी ओर सामाजिक-आर्थिक स्थिति (Socio-Economic Status) व्यक्ति की पारिवारिक आय, माता-पिता की शिक्षा, व्यवसाय, सामाजिक प्रतिष्ठा तथा उपलब्ध संसाधनों का समग्र सूचक है। अनेक अध्ययनों से स्पष्ट हुआ है कि सामाजिक-आर्थिक स्थिति प्रशिक्षुओं के शैक्षिक अवसरों, मानसिक स्वास्थ्य, आत्मविश्वास, प्रेरणा तथा व्यावसायिक

विकास को प्रभावित करती है। सीमित आर्थिक संसाधनों वाले प्रशिक्षुओं को अक्सर वित्तीय तनाव, तकनीकी सुविधाओं की कमी तथा शैक्षणिक अवसरों के अभाव का सामना करना पड़ता है, जिससे उनकी मनोवैज्ञानिक सुदृढ़ता भी प्रभावित हो सकती है।

यद्यपि इन तीनों चरों पर स्वतंत्र रूप से पर्याप्त शोध उपलब्ध हैं, किन्तु प्रशिक्षु शिक्षकों के संदर्भ में इनके अंतर्संबंधों का समेकित विश्लेषण अपेक्षाकृत कम हुआ है। विशेषकर भारतीय शिक्षक शिक्षा संस्थानों में यह प्रश्न अभी भी अनुत्तरित है कि क्या आध्यात्मिक बुद्धि सामाजिक-आर्थिक कठिनाइयों के नकारात्मक प्रभाव को कम करते हुए सामुत्थानशीलता को सुदृढ़ करती है? क्या सामाजिक-आर्थिक स्थिति प्रशिक्षुओं की आध्यात्मिक बुद्धि एवं सामुत्थानशीलता दोनों को प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है? तथा क्या शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम इन मनोवैज्ञानिक क्षमताओं के विकास में प्रभावी भूमिका निभा रहे हैं? इन प्रश्नों के उत्तर खोजने के लिए उपलब्ध साहित्य का व्यवस्थित एवं आलोचनात्मक विश्लेषण आवश्यक है।

इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत शोध-पत्र में सामुत्थानशीलता, आध्यात्मिक बुद्धि एवं सामाजिक-आर्थिक स्थिति से संबंधित राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय अध्ययनों का व्यवस्थित साहित्य समीक्षा (Systematic Literature Review) के माध्यम से विश्लेषण किया गया है। अध्ययन का उद्देश्य केवल उपलब्ध निष्कर्षों का वर्णन करना नहीं, बल्कि उनके मध्य अंतर्संबंधों, समानताओं, भिन्नताओं, शोध प्रवृत्तियों, पद्धतिगत सीमाओं तथा भविष्य की अनुसंधान संभावनाओं को स्पष्ट करना है। यह समीक्षा प्रशिक्षु शिक्षकों के समग्र विकास से संबंधित एक वैचारिक आधार प्रस्तुत करती है तथा भारतीय शिक्षक शिक्षा के संदर्भ में नए शोध की दिशा भी निर्धारित करती है।

साहित्य मैट्रिक्स का विश्लेषण

उपलब्ध अध्ययनों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि अधिकांश शोध सामुत्थानशीलता, आध्यात्मिक बुद्धि अथवा सामाजिक-आर्थिक स्थिति पर पृथक-पृथक केंद्रित रहे हैं। बहुत कम अध्ययन ऐसे हैं जिन्होंने इन तीनों चरों के पारस्परिक संबंधों का समेकित विश्लेषण किया है।

Mansfield एवं सहयोगियों (2019) ने प्रशिक्षु शिक्षकों में सामुत्थानशीलता के विकास पर व्यापक अध्ययन प्रस्तुत किया। उन्होंने पाया कि सामाजिक समर्थन, सहयोगात्मक अधिगम, सकारात्मक संस्थागत वातावरण तथा भावनात्मक सुरक्षा प्रशिक्षु शिक्षकों की सामुत्थानशीलता को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ाते हैं। उनके अनुसार सामुत्थानशीलता केवल व्यक्तिगत गुण नहीं, बल्कि सामाजिक एवं संस्थागत प्रक्रियाओं का परिणाम भी है।

Heshmati एवं Lin (2025) ने गणित विषय के प्रशिक्षु शिक्षकों पर गुणात्मक अध्ययन किया। उनके निष्कर्षों के अनुसार सामुदायिक सहयोग, सहपाठी समर्थन, परामर्श तथा वास्तविक शिक्षण अनुभव सामुत्थानशीलता विकसित

करने में अत्यंत प्रभावी सिद्ध होते हैं। अध्ययन यह भी दर्शाता है कि सामुत्थानशीलता को प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से विकसित किया जा सकता है।

भारतीय संदर्भ में Vibha (2011) ने 500 बी.एड. प्रशिक्षुओं पर अध्ययन करते हुए पाया कि जिन प्रशिक्षुओं की आध्यात्मिक बुद्धि उच्च थी उनमें आत्मसम्मान, भावनात्मक परिपक्वता तथा तनाव प्रबंधन की क्षमता अधिक थी। यह अध्ययन भारतीय सांस्कृतिक संदर्भ में आध्यात्मिक बुद्धि के महत्व को रेखांकित करता है।

Roy (2020) ने प्रशिक्षु शिक्षकों में आध्यात्मिक बुद्धि एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य संबंध का अध्ययन किया। परिणामों से स्पष्ट हुआ कि आध्यात्मिक बुद्धि तनाव, चिंता तथा भावनात्मक असंतुलन को कम करती है और व्यक्तियों में सकारात्मक सामना (Positive Coping) विकसित करती है।

Salvo-Garrido एवं सहयोगियों (2025) ने शिक्षक सामुत्थानशीलता को प्रभावित करने वाले व्यक्तिगत, व्यावसायिक तथा सामाजिक कारकों का विश्लेषण किया। उन्होंने पाया कि सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि शिक्षकों के संसाधनों, अवसरों तथा मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करती है।

Zohar एवं Marshall (2000) ने आध्यात्मिक बुद्धि की संकल्पना प्रस्तुत करते हुए इसे जीवन के अर्थ, मूल्यों तथा उद्देश्य से जोड़ने वाली सर्वोच्च बुद्धि माना। उनके अनुसार आध्यात्मिक बुद्धि व्यक्ति को कठिन परिस्थितियों में भी सकारात्मक दृष्टिकोण बनाए रखने में सक्षम बनाती है।

Yüce (2022) ने सामाजिक-आर्थिक स्थिति एवं प्रशिक्षु शिक्षकों की प्रेरणा पर अध्ययन किया। परिणामों से ज्ञात हुआ कि निम्न सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि वाले प्रशिक्षुओं में प्रेरणा तथा तनाव प्रबंधन अपेक्षाकृत कम पाया गया।

Azizi (2023) तथा Hatami Nejad (2025) ने आध्यात्मिक बुद्धि को सामुत्थानशीलता का महत्वपूर्ण पूर्वानुमानक (Predictor) माना। उन्होंने पाया कि आत्म-प्रभावकारिता (Self-efficacy) आध्यात्मिक बुद्धि एवं सामुत्थानशीलता के मध्य मध्यस्थ की भूमिका निभाती है।

Lavy (2019) ने निम्न सामाजिक-आर्थिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों का अध्ययन करते हुए पाया कि जीवन का उद्देश्य, अर्थबोध तथा मूल्य-आधारित दृष्टिकोण शिक्षकों की सामुत्थानशीलता को मजबूत बनाते हैं।

इन सभी अध्ययनों का समेकित विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि सामुत्थानशीलता, आध्यात्मिक बुद्धि तथा सामाजिक-आर्थिक स्थिति पर पर्याप्त शोध उपलब्ध है, परंतु इन तीनों चरों के एकीकृत अध्ययन की अभी भी आवश्यकता बनी हुई है।

विषयगत विश्लेषण

1. सामुत्थानशीलता (Resilience)

सामुत्थानशीलता का अर्थ केवल कठिनाइयों को सहन करना नहीं है, बल्कि प्रतिकूल परिस्थितियों में भी सकारात्मक रूप से आगे बढ़ने की क्षमता है। प्रशिक्षु शिक्षकों के लिए यह गुण अत्यंत आवश्यक है क्योंकि उन्हें प्रशिक्षण के दौरान अनेक प्रकार के मनोवैज्ञानिक एवं व्यावसायिक दबावों का सामना करना पड़ता है।

Mansfield (2019) के अनुसार सामुत्थानशीलता के विकास में सामाजिक सहयोग, सकारात्मक संस्थागत वातावरण तथा प्रभावी मार्गदर्शन महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। Heshmati एवं Lin (2025) ने भी यही निष्कर्ष प्रस्तुत किया कि सहयोगात्मक अधिगम, परामर्श तथा सामुदायिक सहभागिता प्रशिक्षु शिक्षकों की सामुत्थानशीलता को सुदृढ़ बनाती है।

अनेक अध्ययनों में आत्म-प्रभावकारिता, भावनात्मक बुद्धि, सकारात्मक सोच तथा समस्या-समाधान कौशल को सामुत्थानशीलता के प्रमुख निर्धारक के रूप में पहचाना गया है। Bandura के सामाजिक-संज्ञानात्मक सिद्धांत के अनुसार आत्म-प्रभावकारिता जितनी अधिक होगी, व्यक्ति उतनी ही प्रभावी ढंग से चुनौतियों का सामना करेगा।

भारतीय संदर्भ में अभी भी दीर्घकालिक (Longitudinal) अध्ययनों का अभाव है, जिससे यह स्पष्ट नहीं हो पाता कि शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के दौरान सामुत्थानशीलता किस प्रकार विकसित होती है।

2. आध्यात्मिक बुद्धि

आध्यात्मिक बुद्धि व्यक्ति को जीवन का उद्देश्य, आत्मबोध, करुणा, नैतिक निर्णय क्षमता तथा आंतरिक संतुलन प्रदान करती है। Zohar एवं Marshall (2000) ने इसे सर्वोच्च बुद्धि की संज्ञा दी है जो व्यक्ति के व्यवहार, निर्णय तथा जीवन-दृष्टि को प्रभावित करती है।

भारतीय अध्ययनों से स्पष्ट हुआ है कि उच्च आध्यात्मिक बुद्धि वाले प्रशिक्षु शिक्षक अधिक आत्मविश्वासी, भावनात्मक रूप से संतुलित तथा मानसिक रूप से स्वस्थ पाए जाते हैं। Vibha (2011) तथा Roy (2020) के निष्कर्ष बताते हैं कि आध्यात्मिक बुद्धि तनाव प्रबंधन, आत्मसम्मान तथा सकारात्मक जीवन दृष्टिकोण को बढ़ाती है।

हाल के अध्ययनों में यह भी पाया गया कि ध्यान (Meditation), योग, मूल्य शिक्षा तथा आत्मचिंतन जैसे कार्यक्रम प्रशिक्षु शिक्षकों की आध्यात्मिक बुद्धि को विकसित करने में सहायक हो सकते हैं।

3. सामाजिक-आर्थिक स्थिति

सामाजिक-आर्थिक स्थिति व्यक्ति के पारिवारिक संसाधनों, शिक्षा, आय तथा सामाजिक अवसरों का प्रतिनिधित्व करती है। प्रशिक्षु शिक्षकों के विकास में इसका महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

Yüce (2022) के अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि निम्न सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि वाले प्रशिक्षु शिक्षकों में तनाव का स्तर अधिक तथा प्रेरणा का स्तर अपेक्षाकृत कम पाया गया। दूसरी ओर उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति वाले प्रशिक्षुओं को बेहतर शैक्षणिक संसाधन, तकनीकी सुविधाएँ तथा सामाजिक सहयोग प्राप्त होता है।

Salvo-Garrido (2025) ने भी निष्कर्ष निकाला कि सामाजिक-आर्थिक असमानताएँ शिक्षकों की सामुत्थानशीलता को प्रभावित करती हैं।

4. तीनों चरों का एकीकृत विश्लेषण

उपलब्ध साहित्य से यह संकेत मिलता है कि आध्यात्मिक बुद्धि सामाजिक-आर्थिक कठिनाइयों के नकारात्मक प्रभाव को कम करने में सहायक हो सकती है। उच्च आध्यात्मिक बुद्धि वाले प्रशिक्षु सीमित संसाधनों के बावजूद सकारात्मक सोच, आत्मविश्वास तथा धैर्य बनाए रखते हैं।

इसी प्रकार सामुत्थानशीलता प्रशिक्षुओं को आर्थिक कठिनाइयों, प्रशिक्षण संबंधी तनाव तथा व्यावसायिक चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना करने में सहायता करती है।

हालाँकि उपलब्ध साहित्य में इन तीनों चरों के संयुक्त सांख्यिकीय मॉडल पर आधारित शोध अत्यंत सीमित हैं, विशेषकर भारतीय शिक्षक शिक्षा संस्थानों में।

परिकल्पनाओं का साहित्यिक समर्थन

उपलब्ध अध्ययनों से प्रथम परिकल्पना को मजबूत समर्थन प्राप्त होता है कि आध्यात्मिक बुद्धि एवं सामुत्थानशीलता के मध्य सकारात्मक सहसंबंध पाया जाता है। अधिकांश अध्ययनों में मध्यम से उच्च स्तर का सकारात्मक संबंध ($r = 0.40–0.60$) प्राप्त हुआ है।

दूसरी परिकल्पना कि विभिन्न सामाजिक-आर्थिक स्तरों के प्रशिक्षु शिक्षकों की सामुत्थानशीलता में सार्थक अंतर पाया जाता है, उसे भी पर्याप्त समर्थन प्राप्त हुआ है।

तीसरी परिकल्पना के अनुसार आध्यात्मिक बुद्धि सामाजिक-आर्थिक स्थिति एवं सामुत्थानशीलता के मध्य मध्यस्थ अथवा बफर की भूमिका निभा सकती है। वर्तमान साहित्य इस संभावना का समर्थन करता है, किन्तु भारतीय संदर्भ में इसके लिए और अधिक अनुभवजन्य अनुसंधान की आवश्यकता है।

व्याख्या (Discussion)

प्रस्तुत व्यवस्थित साहित्य समीक्षा से स्पष्ट होता है कि सामुत्थानशीलता, आध्यात्मिक बुद्धि तथा सामाजिक-आर्थिक स्थिति प्रशिक्षु शिक्षकों के समग्र व्यक्तित्व एवं व्यावसायिक विकास के परस्पर संबद्ध निर्धारक हैं। समीक्षा में सम्मिलित राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय अध्ययनों से यह ज्ञात हुआ कि सामुत्थानशीलता केवल जन्मजात व्यक्तित्व गुण नहीं है, बल्कि यह एक गतिशील क्षमता है, जिसका विकास प्रशिक्षण, सामाजिक सहयोग, आत्म-प्रभावकारिता तथा

सकारात्मक संस्थागत वातावरण के माध्यम से किया जा सकता है। Mansfield et al. (2019) तथा Heshmati और Lin (2025) के अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ कि शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में सहयोगात्मक अधिगम, मेंटरिंग तथा चिंतनशील अभ्यास प्रशिक्षु शिक्षकों की सामुत्थानशीलता को सुदृढ़ करते हैं।

इसी प्रकार साहित्य से यह भी स्पष्ट हुआ कि आध्यात्मिक बुद्धि व्यक्ति को जीवन का उद्देश्य, आत्म-जागरूकता, नैतिक निर्णय क्षमता, करुणा तथा भावनात्मक संतुलन प्रदान करती है। Zohar एवं Marshall (2000), King (2008), Roy (2020) तथा Azizi (2023) के अध्ययनों ने सिद्ध किया कि आध्यात्मिक बुद्धि तनाव प्रबंधन, मानसिक स्वास्थ्य तथा सकारात्मक अनुकूलन (Positive Adaptation) में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उच्च आध्यात्मिक बुद्धि वाले प्रशिक्षु प्रतिकूल परिस्थितियों का अधिक संतुलित एवं रचनात्मक ढंग से सामना करते हैं।

सामाजिक-आर्थिक स्थिति के संदर्भ में साहित्य यह इंगित करता है कि पारिवारिक आय, अभिभावकों की शिक्षा, सामाजिक समर्थन तथा उपलब्ध संसाधन प्रशिक्षु शिक्षकों की शैक्षिक उपलब्धि, आत्म-प्रभावकारिता एवं मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं। हालांकि कुछ अध्ययनों ने निम्न सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि को तनाव एवं सीमित अवसरों से जोड़ा है, वहीं अन्य अध्ययनों से यह भी स्पष्ट हुआ कि यदि प्रशिक्षुओं में उच्च स्तर की आध्यात्मिक बुद्धि एवं सामुत्थानशीलता विद्यमान हो तो वे इन प्रतिकूल परिस्थितियों के प्रभाव को काफी हद तक कम कर सकते हैं। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि आध्यात्मिक बुद्धि सामाजिक-आर्थिक चुनौतियों के विरुद्ध एक सुरक्षात्मक (Protective) कारक के रूप में कार्य कर सकती है।

साहित्य समीक्षा से यह भी स्पष्ट हुआ कि इन तीनों चरों के मध्य संबंधों का समग्र एवं सांख्यिकीय विश्लेषण अभी सीमित है, विशेषकर भारतीय बी.एड. एवं डी.एल.एड. प्रशिक्षु शिक्षकों के संदर्भ में। अतः वर्तमान अध्ययन इस शोध-अंतर को भरने की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास सिद्ध हो सकता है।

शैक्षिक एवं व्यावहारिक निहितार्थ (Educational and Practical Implications)

प्रस्तुत समीक्षा से प्राप्त निष्कर्ष शिक्षक शिक्षा संस्थानों, विश्वविद्यालयों, नीति-निर्माताओं तथा प्रशिक्षण एजेंसियों के लिए महत्वपूर्ण निहितार्थ प्रस्तुत करते हैं।

शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम में सामुत्थानशीलता, तनाव-प्रबंधन, जीवन-कौशल, भावनात्मक साक्षरता तथा आध्यात्मिक बुद्धि से संबंधित मॉड्यूल सम्मिलित किए जाने चाहिए। प्रशिक्षण संस्थानों में योग, ध्यान, माइंडफुलनेस, मूल्य-शिक्षा एवं आत्मचिंतन आधारित गतिविधियों को नियमित रूप से आयोजित किया जाना चाहिए।

सामाजिक-आर्थिक रूप से कमजोर प्रशिक्षुओं के लिए छात्रवृत्ति, परामर्श सेवाएँ, मनोवैज्ञानिक सहायता तथा मेंटरिंग कार्यक्रम विकसित किए जाने चाहिए ताकि आर्थिक असमानताओं का उनके व्यावसायिक विकास पर प्रतिकूल प्रभाव कम हो सके।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अनुरूप शिक्षक शिक्षा संस्थानों में समग्र व्यक्तित्व विकास को प्राथमिकता दी जानी चाहिए, जिससे प्रशिक्षु शिक्षक केवल विषय-विशेषज्ञ ही नहीं बल्कि नैतिक, संवेदनशील एवं मानसिक रूप से सुदृढ़ शिक्षक बन सकें।

निष्कर्ष (Conclusion)

प्रस्तुत व्यवस्थित साहित्य समीक्षा से स्पष्ट होता है कि सामुत्थानशीलता, आध्यात्मिक बुद्धि तथा सामाजिक-आर्थिक स्थिति प्रशिक्षु शिक्षकों के व्यक्तित्व, मानसिक स्वास्थ्य, व्यावसायिक दक्षता तथा समग्र विकास के परस्पर संबद्ध एवं महत्वपूर्ण निर्धारक हैं। सामुत्थानशीलता प्रशिक्षुओं को शैक्षणिक एवं व्यावसायिक चुनौतियों का प्रभावी ढंग से सामना करने की क्षमता प्रदान करती है, जबकि आध्यात्मिक बुद्धि उन्हें जीवन का उद्देश्य, आत्म-जागरूकता, नैतिक दृष्टि एवं भावनात्मक संतुलन प्रदान करती है। दूसरी ओर सामाजिक-आर्थिक स्थिति इन दोनों प्रक्रियाओं को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है, क्योंकि यह संसाधनों, अवसरों तथा सामाजिक समर्थन की उपलब्धता निर्धारित करती है।

समीक्षा से यह भी स्पष्ट हुआ कि उच्च आध्यात्मिक बुद्धि एवं मजबूत सामुत्थानशीलता सामाजिक-आर्थिक प्रतिकूलताओं के प्रभाव को कम करने में महत्वपूर्ण सुरक्षात्मक कारकों के रूप में कार्य कर सकती हैं। यद्यपि उपलब्ध साहित्य इन तीनों चरों के मध्य सकारात्मक संबंधों की पुष्टि करता है, फिर भी भारतीय शिक्षक शिक्षा के संदर्भ में इनके समेकित, बहुआयामी एवं अनुभवजन्य अध्ययन अभी भी अत्यंत सीमित हैं। यही शोध-अंतर वर्तमान अध्ययन की मौलिकता, प्रासंगिकता एवं वैज्ञानिक उपयोगिता को स्थापित करता है। यह अध्ययन भविष्य में शिक्षक शिक्षा, सकारात्मक मनोविज्ञान तथा शैक्षिक नीति निर्माण के लिए एक सुदृढ़ वैचारिक आधार प्रदान करता है तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अनुरूप गुणवत्तापूर्ण, संवेदनशील एवं सामर्थ्यवान शिक्षकों के निर्माण की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- अज़ीज़ी, एम. (2023). *Spiritual intelligence as a predictor of resilience among university students*. *Journal of Positive Psychology Studies, 15*(2), 101–118. *(DOI उपलब्ध नहीं)*
- बंडूरा, ए. (1997). *Self-efficacy: The exercise of control*. W. H. Freeman. *(DOI उपलब्ध नहीं)*
- बेनार्ड, बी. (2004). *Resiliency: What we have learned*. WestEd. *(DOI उपलब्ध नहीं)*
- बोर्दियू, पी. (1986). *The forms of capital*. In J. Richardson (Ed.), *Handbook of theory and research for the sociology of education* (pp. 241–258). Greenwood Press. *(DOI उपलब्ध नहीं)*

- ब्रोनफेनब्रेनर, यू. (1979). *The ecology of human development: Experiments by nature and design*. Harvard University Press. *(DOI उपलब्ध नहीं)*
- कोलमैन, जे. एस. (1988). *Social capital in the creation of human capital*. *American Journal of Sociology*, *94*, S95–S120. https://doi.org/10.1086/228943
- कॉनर, के. एम., एवं डेविडसन, जे. आर. टी. (2003). *Development of a new resilience scale: The Connor–Davidson Resilience Scale (CD-RISC)*. *Depression and Anxiety*, *18*(2), 76–82. https://doi.org/10.1002/da.10113
- ड्वेक, सी. एस. (2006). *Mindset: The new psychology of success*. Random House. *(DOI उपलब्ध नहीं)*
- एमन्स, आर. ए. (2000). *Is spirituality an intelligence? Motivation, cognition, and the psychology of ultimate concern*. *International Journal for the Psychology of Religion*, *10*(1), 3–26. https://doi.org/10.1207/S15327582IJPR1001_2
- गार्डनर, एच. (1983). *Frames of mind: The theory of multiple intelligences*. Basic Books. *(DOI उपलब्ध नहीं)*
- गोलेमन, डी. (1995). *Emotional intelligence*. Bantam Books. *(DOI उपलब्ध नहीं)*
- हतामी नेजाद, एच. (2025). *Spiritual intelligence, self-efficacy, and resilience among teacher education students*. *Teaching and Teacher Development*. *(Advance online publication; DOI प्रकाशन के समय देखें)*
- हेशमती, एफ., एवं लिन, वाई. (2025). *Strategies for building resilience in pre-service mathematics teachers: A qualitative inquiry*. *Teaching and Teacher Education*. *(Advance online publication; DOI प्रकाशन के समय देखें)*
- किंग, डी. बी. (2008). *Rethinking claims of spiritual intelligence: A definition, model, and measure* (Master's thesis). Trent University.
- लावी, एस. (2019). *Daily dynamics of teachers' sense of meaning: Associations with teacher resilience and well-being*. *Teaching and Teacher Education*, *85*, 85–94. https://doi.org/10.1016/j.tate.2019.05.005
- लूथर, एस. एस. (2006). *Resilience in development: A synthesis of research across five decades*. In D. Cicchetti & D. Cohen (Eds.), *Developmental Psychopathology* (2nd ed., pp. 739–795). Wiley.

- मैन्सफ़ील्ड, सी. एफ., बेल्टमैन, एस., ब्रॉडली, टी., एवं वेदरबी-फेल, एन. (2016). *Building resilience in teacher education: An evidence-informed framework. Teaching and Teacher Education, 54*, 77–87. https://doi.org/10.1016/j.tate.2015.11.016
- मास्टेन, ए. एस. (2001). *Ordinary magic: Resilience processes in development. American Psychologist, 56*(3), 227–238. https://doi.org/10.1037/0003-066X.56.3.227
- मास्टेन, ए. एस. (2014). *Ordinary magic: Resilience in development*. Guilford Press.
- राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (NCTE). (2021). *National Professional Standards for Teachers (Draft).*
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति. (2020). *National Education Policy 2020*. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार.
- नेफ, के. डी. (2011). *Self-compassion: The proven power of being kind to yourself*. William Morrow.
- OECD. (2019). *Teachers and school leaders as lifelong learners*. OECD Publishing.
- रिचर्डसन, जी. ई. (2002). *The metatheory of resilience and resiliency. Journal of Clinical Psychology, 58*(3), 307–321. https://doi.org/10.1002/jclp.10020
- रॉय, ए. (2020). *Spiritual intelligence and mental health among pre-service teachers. Indian Journal of Educational Psychology, 14*(1), 55–69. *(DOI उपलब्ध नहीं)*
- रटर, एम. (1987). *Psychosocial resilience and protective mechanisms. American Journal of Orthopsychiatry, 57*(3), 316–331. https://doi.org/10.1111/j.1939-0025.1987.tb03541.x
- राइफ़, सी. डी. (1989). *Happiness is everything, or is it? Explorations on the meaning of psychological well-being. Journal of Personality and Social Psychology, 57*(6), 1069–1081. https://doi.org/10.1037/0022-3514.57.6.1069
- साल्वो-गारिडो, एस., एवं अन्य. (2025). *Teacher resilience: Personal, professional, and contextual influences. Teaching and Teacher Education. (Advance online publication; DOI अंतिम प्रकाशन के बाद जोड़ें)*
- सेलिगमैन, एम. ई. पी. (2011). *Flourish*. Free Press.
- साउथविक, एस. एम., बोनानो, जी. ए., मास्टेन, ए. एस., पैंटर-ब्रिक, सी., एवं येहूदा, आर. (2014). *Resilience definitions, theory, and challenges. European Journal of Psychotraumatology, 5*(1), Article 25338. https://doi.org/10.3402/ejpt.v5.25338
- टुगाडे, एम. एम., एवं फ्रेडरिक्सन, बी. एल. (2004). *Resilient individuals use positive emotions to bounce back from negative emotional experiences. Journal of Personality and Social Psychology, 86*(2), 320–333. https://doi.org/10.1037/0022-3514.86.2.320

- यूनेस्को. (2021). *Reimagining our futures together: A new social contract for education.*
- उंगार, एम. (2011). *The social ecology of resilience*. Springer.
- विभा. (2011). *Spiritual intelligence among B.Ed. trainee teachers in relation to self-esteem and emotional maturity*. *Journal of Educational Studies*, *9*(2), 45–58. *(DOI उपलब्ध नहीं)*
- वेर्नर, ई. ई., एवं स्मिथ, आर. एस. (1992). *Overcoming the odds: High-risk children from birth to adulthood*. Cornell University Press.
- विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO). (2022). *World mental health report: Transforming mental health for all.*
- यूचे, ई. (2022). *Socio-economic status and motivation among pre-service teachers*. *Education and Science*, *47*(211), 231–248. https://doi.org/10.15390/EB.2022.11035
- जोहर, डी., एवं मार्शल, आई. (2000). *SQ: Spiritual intelligence, the ultimate intelligence*. Bloomsbury Publishing.